आरी–तारी / जरदोज़ी क्लस्टर विकास परियोजना

प्रगति रिपोर्ट वर्ष 2007 से 2010

प्रेषितः

आयुक्त उद्योग, राजस्थान सरकार

द्वारा :

महाराणा प्रताप अध्ययन एवम् जन कल्याण संस्थान ¼,e- ih- ,l-½
205-206, Prakashdeep, Near Mayank Trade Center, Station Road, Jaipur
Tel. No. 0141-2361794, 2368794, Fax-2375527; 98297 93790 (M), 9929108790
www.aaritariwork.com mail: admin@aaritariwork.com, mpsansthan@yahoo.com

पाठ्य क्रमांक

विषय	पृष्ठ क्रमांक
परियोजना विवरण	
परियोजना एक नजर	3
भौगोलिक स्थिति	3
क्लस्टर विकास परियोजना से पूर्व की स्थिति	5
बिन्दुवार पूर्व की परिस्थिति का विश्लेषणात्मक विवरण	5
संस्थान द्वारा परियोजना के तहत किए गए कार्य	7
संस्थान द्वारा संम्पादित गतिविधियां	
मोटिवेशन सेमिनार	7
फॉलोअप सेमिनार	7
दस्तकार सहायता केन्द्र की स्थापना	8
क्लस्टर विकास समूहों का गठन	8
दस्तकार प्रशिक्षण कार्यक्रम	
कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम (एस.डी.टी.)	9
डिजाइन विकास प्रशिक्षण (डी.डी.टी.)	10
तकनिकी उन्नयन प्रशिक्षण (टी.यू.टी.)	11
संस्थान द्वारा क्लस्टर उत्पाद के बाजार विकास व विक्रय संवर्धन हेतु किये गए प्रयास	11
संस्थान द्वारा समय–समय पर मेंलों व प्रदर्शनियों में भाग लिया उनका विवरण	12
संस्थान की उपलबिधयां	14
संलग्न परिपत्र	
वर्षवार 2007 से 2010 तक संस्थान द्वारा क्लस्टर विकास हेतु आयोजित गतिविधियां	15

AARI TARI CLUSTER

आरी–तारी /जरदोजी क्लस्टर विकास परियोजना प्रगति रिपोर्ट

परियोजना एक नजर :

मुख्यमंत्री क्लस्टर विकास कार्यक्रम के तहत नायला (जयपुर) में आरी–तारी/जरदौज़ी क्लस्टर विकास परियोजना का संचालन महाराणा प्रताप अध्ययन एवं जन कल्याण संस्थान द्वारा किया जा रहा है। संस्थान को उक्त परियोजना का दायित्व व्यवहारिक तौर पर मार्च, 2007 में सौंपा गया था जबकि अनिर्णित स्थिति तथा प्रोजेक्ट स्टाफ की नियुक्ति के अनुमोदन में देरी के कारण परियोजना को गति अगस्त 2007 में समन्वयक पद की स्वीकृति के साथ मिल पाई। संस्थान ने विगत तीन वर्ष की अवधि में क्लस्टर विकास परियोजना के अंतर्गत काफी सराहनीय तथा ठोस उपलब्धियां अर्जित की हैं।
क्लस्टर विकास परियोजना को लागू करने से पूर्व नायला में गोटा पत्ती/जरदोज़ी का काम पूरी तरह से असंगठित था। एवं दस्तकारों को प्रशिक्षण व वित्तीय स्वावलम्बन की दृष्टि से कोई अवसर नहीं मिल पा रहा था। संस्थान द्वारा कारीगरों को आरी–तारी का प्रशिक्षण प्रदान किया गया जिसके कारण कार्य में अभिनव प्रयोग से दस्तकारों की मजदूरी दर में वृद्धि हुई तथा कार्य क्षमता बढ़ी है। संस्थान ने परियोजना के दौरान अभी तक 260 दस्तकारों को दो माह का कौशल विकास प्रशिक्षण उपलब्ध करवाया है। वहीं डिजाइन डवल्पमेंट के छह प्रशिक्षणों में 120 दस्तकारों को प्रशिक्षित किया गया है। संस्थान ने 100 दस्तकारों को तकनीकी विकास के पांच प्रशिक्षणों के माध्यम से लाभान्वित किया है। इस तरह 3500 दस्तकारों में से 100 दस्तकारों को कौशल उन्नयन, डिजाइन तथा तकनीकी विकास का प्रशिक्षण प्राप्त हो सका है। इन प्रशिक्षणों से लाभार्थियों का दक्षता विकास तो हुआ ही है साथ ही वे अपनी आय में भी वृद्धि करने में सफल रहे हैं। एवं कुछ महिला दस्तकारों ने अपने स्वयं के कारखाने भी स्थापित किए है। जहां वे अन्य महिला दस्तकारों को रोजगार मुहैया करवा रही है. इस प्रकार प्रशिक्षित लाभार्थी अब अपने–अपने क्षेत्र में दस्तकारों (आर्टीजन) को बड़ी संख्या में अपने अनुभव व ज्ञान का लाभ पहुंचा रहे हैं। इस पूरी प्रक्रिया में संस्थान सक्रिय समन्वय स्थापित कर रहा है एवं ज्यादा से ज्यादा दस्तकारों को कौशल विकास, डिजाइन डवल्पमेंट तथा तकनीकी विकास का प्रशिक्षण देने हेतु प्रयासरत है। दरअसल प्रशिक्षण की यह पूरी प्रक्रिया मध्यवर्ती स्थिति में है एवं दस्तकारों को सतत व निरंतर प्रशिक्षण दिये जाने पर ही परियोजना के उद्देश्यों को हासिल किया जा सकेगा।

भौगोलिक स्थिति :

जयपुर तथा आस–पास के क्षेत्र में प्राचीन काल से ही आरी–तारी हस्तकला का कार्य प्रसिद्ध है। मुख्यतया यह कार्य जयपुर जिले के समीप स्थित ग्राम नायला व आस पास के क्षेत्र में किया जाता है। इस कार्य के लिए प्रसिद्ध ग्राम नायला जयपुर आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 11 पर स्थित है, जो कि जयपुर शहर से लगभग 21 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। इस क्षेत्र में कच्चे माल व मानव संसाधन की सहज उपलब्धता ने इस क्षेत्र को उक्त हस्तकला के लिए चिन्हित किया है। तथा इसी कारण पिछले कई वर्षों से नायला व आस–पास का क्षेत्र इस हस्तकला से निर्मित उत्पाद यथा पारंम्परिक परिधान के लिए प्रसिद्ध रहा है, जो कि आरी–तारी या जरदोजी के नाम से विख्यात है।
जयपुर की समीपता के कारण ग्राम नायला व आस–पास के क्षेत्र में आधारभूत सुविधाओं जैसे बिजली, पानी, शिक्षा व अन्य संचार की सुविधाओं की सहज उपलब्धता है। चूंकि यह क्षेत्र जयपुर से सीधे

AARTARI CLUSTER

राजमार्ग से जुडा हे अतः यातायात के संसाधनों की सुगमता इसे राजस्थान ही नही अपितु अन्य कई राज्यों के बडे शहरों से जोडती है।

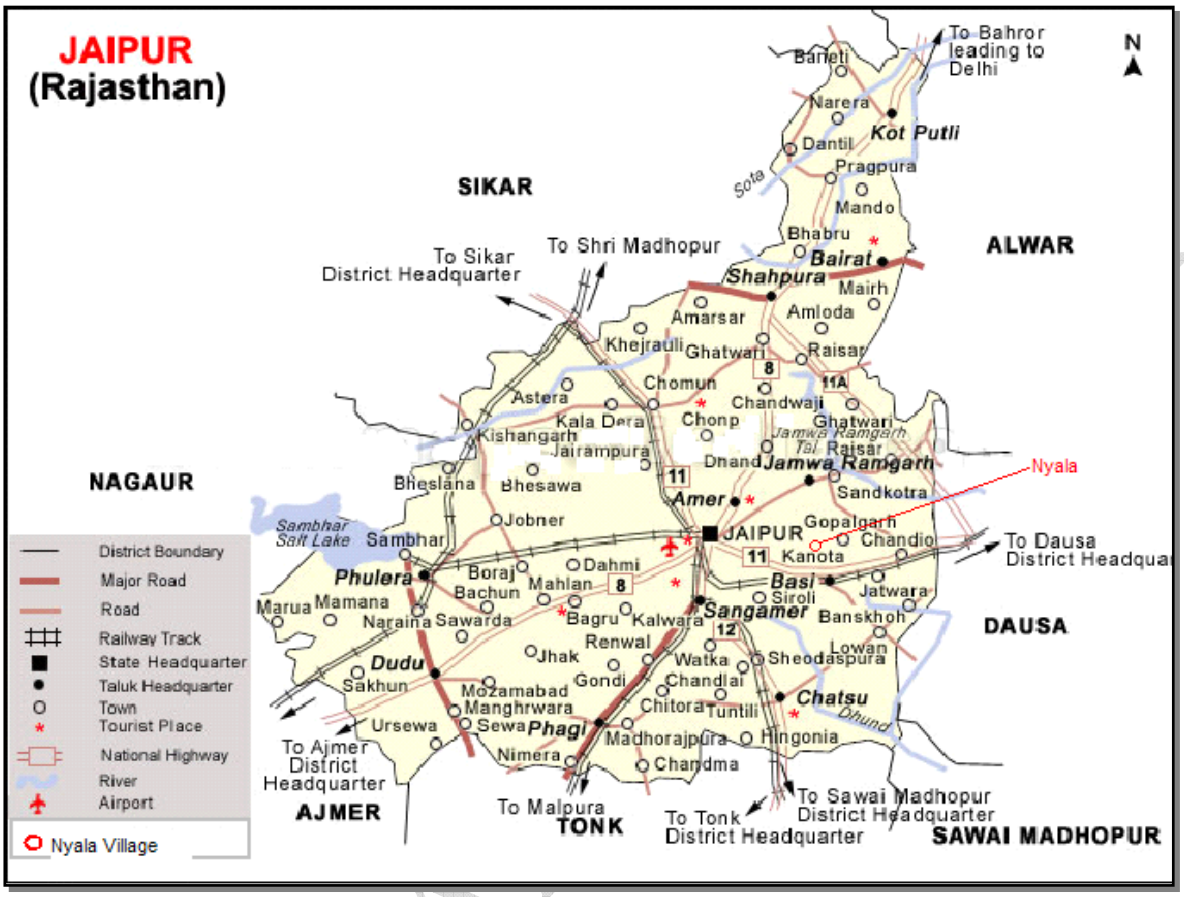

नयला क्लस्टर क्षेत्र का भौगोलिक चित्र

इस क्षेत्र में उपलब्ध सूचनाओं के अनुसार आरी–तारी का कार्य लगभग 1981 में प्रारम्भ हुआ था। तथा तब से यह हस्तकला का कार्य इस क्षेत्र का मुख्य रोजगार का साधन बन गया अनुमान के अनुसार इस कार्य पर लगभग 80% जनसंख्या सीधे तौर पर निर्भर है। मुख्यतः सभी समुदाय व जाती के लोग इस पारम्परिक कार्य से जुडे हुए हैं। इस कार्य में पुरूष व महिला की बराबर की भगीदारी है। जनगणना के अनुसार नायला ग्राम की कुल जनसंख्या 14500 है, जिसमें लगभग 3500 दस्तकार (पुरूष व महिला) सीधे इस कार्य से जुडे हैं।

यह कार्य ग्राम पंचायत नायला के 15 वार्ड के साथ–साथ पास के ही अन्य तीन गांवों मुख्यतया रामजीपुरा, मीणों का बाड तथा हरिकिशनपुरा में भी किया जाता है। इस कार्य में अधिकतर अर्धकुशल लोग ही कार्यरत थे।

क्लस्टर विकास परियोजना से पूर्व की स्थिति :

परियोजना से पूर्व क्षेत्र के दस्तकार असंगठित रूप से कार्य करते थे, कार्य में कुशलता नहीं होने के कारण निर्मित उत्पाद का मूल्य भी उचित नहीं मिलता था। उत्पादित माल की गुणवत्ता तथा माल की किस्में व डिजाइन भी सिमित थे जिससे बाजार की जरूरतों के अनुसार भी उत्पादन नहीं हो पा रहा था।

दस्तकारों के असंगठित होने के कारण अधिकतर कार्य मध्यस्थों के माध्यम से होता था। मध्यस्थ उनसे मजदूरी पर कार्य लेते थे, प्रतिदिन मजदूरी के रूप में 5 से 6 रूपये प्रति घंटे के हिसाब से देते थे। इस प्रकार औसत मजदूरी प्रति दस्तकार 40 से 50 रूपये प्रति दिन होती थी। साथ ही यहां के दस्तकारों का सीधे तौर पर बाजार से कोई सम्पर्क नहीं था। चूकिं दस्तकार मध्यस्थों के माध्यम से कार्य करते थे अतः इन्हे कार्य का पूरा मूल्य नहीं मिल पाता था।

दस्तकारों की वित्तिय स्थिति ठिक न होने के कारण तथा सरकारी व अन्य लाभकारी ऋण योजनाओं कि जानकारी के अभाव में इन्हें आवश्यक्ता होने पर अथवा समय पर धन उपलब्ध नही हो पाता था, जिसके कारण ये न तो अपने कार्य को विस्तार दे पाते थे न ही निर्मित उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार कर पाते थे।

ग्राम नायला तथा आस–पास के दस्तकार चूंकि ज्यादा शिक्षित नहीं थे अतः इन्हे अपने निर्मित अत्पादों के विक्रय के लिए पारम्परिक बाजारों पर निर्भर रहना पडता था जहां भी इनके उत्पादों का मुल्य निर्धारण व विक्रय मध्यस्थों के उपर निर्भर करता था।

⇨ **बिन्दुवार पूर्व की परिस्थिति का विश्लेषणात्मक विवरण :–**

निर्मित उत्पाद :–

क्लस्टर विकास परियोजना से पूर्व नायला में मुख्यतः साडियां व पारंम्परिक राजपूती पोषाकों का ही निर्माण होता था। इन वस्त्रों पर आरी–तारी कार्य के लिए पारम्परिक व कुछ प्रचलित डिजाइनों का ही प्रयोग होता था। इस क्षेत्र में कोई भी प्रशिक्षित डिजाइनर दस्तकारों के लिए उपलब्ध नहीं था, जो कि इस हस्तकला के क्षेत्र में वस्त्र डिजाइनों में अभिनव प्रयोग कर सके। साथ ही साक्षरता की कमी के चलते दस्तकार वर्तमान में बाजारों में प्रचलित रंग–संयोजन व परिधानो के विषय में अनभिज्ञ होने के कारण बाजार की मांग के अनुसार उत्पाद तैयार नहीं कर पाते थे, जिससे उन्हे बाजार में अपने उत्पाद बेचने में कठिनाई होती थी व उत्पादों का उचित मूल्य भी नही मिलता था।

पूर्व में आरी–तारी का कार्य मुख्यतः जॉरजट, क्रैप व इटालियन कपडे पर किया जाता था। यह कार्य मुख्य रूप से बन्धेज, लहरिया व डायड साडियों पर ही किया जाता था, जो कि सीकर से मंगवायी जाती थी।

उत्पादन प्रक्रियाः–

परियोजना से पूर्व आरी–तारी के उत्पादों की उत्पादन प्रक्रिया में मध्यस्थों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। एक मुख्य दस्तकार बुटिक के मालिक या थोक विक्रेताओं से क्रय आदेश लेकर अन्य दस्तकारों के माध्यम से कार्य को सम्पन्न करा कर निर्मित उत्पाद को उन्हे दे देता था तथा मजदूरी के रूप में

ARI TARI CLUSTER

दस्तकारों को 5 से 15 रूपये प्रति घण्टे के हिसाब से मजदूरी देता था जो कि दक्षता व कार्य कुशलता के आधार पर निर्धरित की जाती थी।
तथा इसस पूरी प्रक्रिया में वो स्वंय एक मोटी राशि कमिशन के रूप में रख लेता था जिससे दस्तकारों को उनकी पूरी मजदूरी नहीं मिल पाती थी।

डिजाइन :–

दशकों से दस्तकार उन्हीं प्रचलित डिजाइनों का प्रयोग करते थे जिनमें मुख्य रूप से फूल–पत्ति व रेखा चित्रों का इस्तेमाल किया जाता था। बमुश्किल रंग संयोजन व डिजाइनों मे कोई अभिनव प्रयोग किया जाता था।

वित्तिय सहायताः–

दस्तकारों के असंगठित रूप से कार्य करने की वजह से उन्हें किसी भी प्रकार की वित्तिय सहायता उपलब्ध नहीं थी, जिसकी वजह से उन्हें बिचौलियों पर निर्भर रहना पडता था। तथा धन के अभाव में यह लोग कच्चे माल आदि की खरीद के लिए उंची ब्याज दरों पर ऋण लेते थे। इसके कारण दस्तकार आर्थिक शोषण का शिकार होते थे। असंगठित रूप से कार्य करने के कारण बैंक व वित्तिय संस्थाओं द्वारा भी किसी प्रकार की ऋण सुविधा उपलब्ध नहीं थी।

गुणवत्ता :–
यह दुर्भागय ही है, कि बेहतर संसाधनों, पर्याप्त मात्रा में दस्तकारों की उपलब्धता व निर्मित उत्पादों के लिए बाजार उपलब्ध होने के बावजूद भी कार्यशील दस्तकार निम्न स्तर का जीवन यापन कर रहें थे। तथा यह उत्पाद राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय बाजारों में अपनी पहचान को तरस रहे थे। ज्यादातर दस्तकार लागत बचाने के चक्कर में घटिया किस्म का कच्चा माल उपयोग में लाते थें जिससे निर्मित उत्पाद की गुणवत्ता भी गिर जाती थी व उत्पाद के विक्रय में कठिनाई होती थी।

बाजार :–

आरी–तारी का पारंम्परिक बाजार मुख्यतः राजस्थान, पश्चिम बंगााल, यू.पी., दिल्ली, पंजाब, बिहार, गुजरात व दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों में फैला है। निर्मित उत्पादों की अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में भी अच्छी मांग है, किन्तु कोई भी दस्तकार या इस कार्य से जुडे लोग व संगठन अब तक सीधे निर्यितकों से सम्पर्क करनें व अंतर्राष्ट्रीय बाजार की संभावनाओं को भुनाने में सक्षम नहीं था।

उत्पाद विकास :–

समस्त संसाधन व दस्तकार उपलब्ध होने के बावजूद भी ज्ञान की कमी के कारण व अभिनव प्रयोगों के अभाव में दस्तकार अभी तक केवल साडी, सलवार सूट व पांरम्परिक पोशाकों के निर्माण तक ही सिमित थे। इस कारण उनका बाजार व मजदूरी भी सिमित थी। जबकि वर्तमान बाजार मांग व आधुनिक दौर में नए उपभेक्ताओं की जरूरतों के अनुसार नए प्रयोगों के साथ नए उत्पादों का निर्माण आवयक था। ताकि दस्तकारों की मजदूरी व बाजार को बढाया जा सके।

⇨ संस्थान द्वारा परियोजना के तहत किए गए कार्य :–

प्रस्तावना :–

परियोजना के कियान्वयन के समय मुख्य उद्देश्य न सिर्फ ग्राम नायला में चल रहे असंगठित दस्तकारों को संगंठित करना था अपितु उस क्षेत्र में रहने वाले लोंगों के जीवन स्तर, उनके रोजगार के साधन व आमदनी में बढोतरी करना साथ ही आरी–तारी/जरदोजी के कार्य को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के साथ–साथ इस कला को नए सोपानों के साथ पुनः विकसित करना है।

साथ ही दस्तकारों कों स्वयं के स्वरोजगार/ गृह उद्योग लगाने व उन्हे संचालित करने के योग्य बनाने हेतु प्रशिक्षित करना ताकि वे अपने स्वंय के स्तर पर मुनाफे के साथ कार्य कर सकें व आत्मनिर्भर हों सकें। इस प्रक्रिया में सहायक अन्य संबंधित गतिविधियां जैसे क्लस्टर का आंकलन, दस्तकारों की क्षमता का अंकेक्षण, कार्य क्षेत्र में प्रचलित मानको की पहचान, दस्तकारों को संगठित करना, तथा उनके कौशल विकास हेतु प्रशिक्षित करना आदि। दस्तकारों की जरूरत के अनुसार उन्हे वित्तिय सहायता उपलब्ध करवाना, बाजार उपलब्ध करवाना, उत्पादों के उन्नयन व नए प्रयोगों हेतु प्रशिक्षण व सहयोग उपलब्ध करवाना इत्यादि।

परियोजना का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य गांव के दस्तकारों के रोजगार की खातिर होने वाले पलायन को भी रोकना था, ताकि ये दस्तकार गांव में रहकर ही रोजगार के बेहतर अवसर पा सकें व जीवन यापन कर सकें। इस लक्ष्य की प्रप्ति के लिए व्यवसायिक प्रबंधन के साथ प्रशिक्षण, डिजाइन व संसाधन केन्द्र की स्थापना करना ताकि आरी–तारी के कार्य में लगे दस्तकारों को संबंधित सह गतिविधियों के लिए सहयोग प्रदान किया जा सके।

⇨ संस्थान द्वारा संम्पादित गतिविधियां :–

मोटिवेशन सेमिनार :–

मोटिवेशन सेमिनार आयोजित करनें का मुख्य उद्देश्य दस्तकारों को परियोजना से संबंधित जानकारी उपलब्ध करवाना तथा उन्हे परियोजना से संबंधित अन्य गतिविधियों में भाग लेने हेतु प्रेरित करना व संवेदनशील बनाना था। साथ ही स्वंय सहायता समूह के गठन हेतु प्रेरित करना था ।

इस हेतु संस्थान द्वारा वर्ष 2007 से 2008 तक 31 व वर्ष 2008 से 2009 तक 6 अतः कुल 37 मोटिवेशन सेमिनारों का आयोजन किया गया।

इस प्रकार इन मोटिवेशन सेमिनारों में कुल **1230** दस्तकारों ने सक्रिय भाग लिया। जिसमें से **806** महिला दस्तकार व **424** पुरूष दस्तकार शामिल हुए।

फॉलोअप सेमिनार :–

संस्थान द्वारा मोटिवेशन सेमिनार में शामिल हुए दस्तकारों को शेष कियाविधि व क्लस्टर विकास की गतिविधियों से जोडे रखने के साथ उनके सोच व व्यवहार को सकारात्मक रखने हेतु समय–समय पर फॉलोअप सेमिनारों का आयोजन भी किया गया जो कि पूर्ण रूप से अपने उद्देश्य की प्राप्ति में सफल रहा। साथ ही इन सेमिनारों के द्वारा विशेषज्ञों द्वारा दस्तकारों को क्लस्टर विकास के साथ–साथ उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार व उत्पादित माल के विपणन हेतु प्रशिक्षित किया जाता रहा जो कि

ARI TARI CLUSTER

उनके स्वंय के उद्यम व्यवहार विकास के लिए अति महत्वपूर्ण था। संस्थान द्वारा वर्ष 2007 से 2008 तक **14** व वर्ष 2008 से 2009 तक **16** अतः कुल **30** फॉलोअप सेमिनारों का आयोजन किया गया।

इस प्रकार इन फॉलोअप सेमिनारों के माध्ययम से कुल **739** दस्तकारों को लाभान्वित किया गया। जिसमें **507** महिला दस्तकार व **232** पुरूष दस्तकार थे।

दस्तकार सहायता केन्द्र की स्थापना (Formation of Artisans Assitence Center) :–

दस्तकारों कों बेहतर सुविधाएं व सहायता प्रदान करने हेतु संस्थान द्वारा ग्राम नायला में समस्त आवश्यक सुविधाओं से युक्त दस्तकार सहायता केन्द्र की स्थापना की गई। जिससे आरी तारी के कार्य में लगें दस्तकारों को आवश्यक सूचनाएं, कार्य से संबंधित जानकारीं व तकनीकी सहयोग एक ही छत के नीचे मिल सके।

क्लस्टर विकास समूहों का गठन (Formation of Cluster Development Group) :–

क्लस्टर विकास परियोजना के सफल संचालन के लिए क्लस्टर विकास समूह का योगदान काफी महत्वपूर्ण है। किसी भी क्लस्टर विकास परियोजना के लिए समूह रीढ की हड्डी की भांति कार्य करते हैं। इसके अन्तर्गत दस्तकार छोटे–छोटे समूह बनाते हैं, जिसका मुख्य उद्देश्य सामूहिक सहयोग की भावना के साथ कार्य करना होता है। इन समूहों में प्रति समूह 11 से 20 दस्तकार सदस्य होते हैं। जो कि प्रति माह एक सामूहिक बैठक का आयोजन करते हैं। इन समूहों के सदस्यों द्वारा प्रतिमाह प्रति सदस्य कुछ राशि बचत के रूप में एकत्र की जाति है। जो कि प्रति माह बैंक में जमा करवा दी जाती है। व आवश्यक्ता पडने पर समूहों के सदस्यों में ऋण के रूप में वितरित कर दी जाती है। जो कि एक निश्चित समयावधि के लिए होती है। यह समूह परस्पर सहयोग की भावना से क्लस्टर विकास परियोजना के संचालन के लिए तथा आपसी सहयोग की भावना के लिए कार्य करते हैं।

इस प्रकार इन सेमिनारों के माध्ययम से संस्थान द्वारा वर्ष 2007 – 2008 में कुल 20 क्लस्टर विकास समूहों का गठन किया गया। जिसमें कुल सक्रिय सदस्यों की संख्या 303 है। उक्त संख्या में 140 पुरूष दस्तकार व 163 महिला दस्तकार सम्मिलित हैं। इसी कम में वित्तिय वर्ष 2008–2009 में कुल 10 क्लस्टर विकास समूहों का गठन किया गया। जिसमें कुल सक्रिय सदस्यों की संख्या 111 है। वर्ष 2008–09 में गठित उक्त समूहों में शामिल समस्त सदस्य महिला दस्तकार ही हैं। तथा वर्ष 2009–2010 में कुल 7 क्लस्टर विकास समूहों का गठन किया गया। इस वर्ष भी समस्त सदस्य महिला दस्तकार हीं थी जिनकी कुल संख्या 90 है।

AARI TARI CLUSTER

संस्थान द्वारा क्लस्टर विकास समिति का गठन किया गया। जिसमें उपरोक्त सभी **37 क्लस्टर विकास समूहों** के सदस्य सम्मिलित हैं। इस समिति द्वारा परियोजना अवधि समाप्ति के पश्चात् दस्तकारों से संबंधित सम्पूर्ण कार्य संम्पादित किये जायेंगें।

दस्तकार प्रशिक्षण कार्यक्रम (Artisans Training Programme) :–

दस्तकारों के कार्यविधि व उत्पाद गुणवत्ता में सुधार हेतु व उत्पादित माल को वर्तमान परिप्रेष्य में बाजार अनुकूल निर्मित करवाने हेतु संस्थान द्वारा समय–समय पर उक्त अर्द्धकुशल अथवा अकुशल कारीगरों के प्रशिक्षण हेतु विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें अनेक प्रकार के उपयोगी प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया जिनका विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है। :–

कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम (S.D.T.) :–

दस्तकारों की कौशल विकास क्षमता को बढानें के उद्देश्य से संस्थान द्वारा दस्तकार कौशल विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें अकुशल व अर्द्धकुशल दस्तकारों को सम्मिलित किया गया। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में आरी–तारी व जरदोज़ी के कार्य की विभिन्न बारिकीयों यथा प्रयोग में लिये जाने वाले कपडों के अनुसार डिजाइन व रंगों का संयोजन, उक्त आरी–तारी व जरदोजी के कार्य का पृथक–पृथक व आपस में संयोजन इत्यादि से संबंधित विधाओं की जानकारी देना।

कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों के उद्देश्य निम्न हैं :–

- आरी–तारी के अर्ध व अकुशल दस्तकारों हेतु 60 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन करना।
- आरी–तारी व जरदोजी के कार्य को पृथक–पृथक व उनके सम्मिलित डिजाइन की कार्य दक्षता को बढाना।
- कार्य में विभिन्न प्रकार के डिजाइनों व रंग संयोजनों का उपयोग करने की कला का प्रशिक्षण देना।
- आरी–तारी के कार्य को व्यवस्थित, समयबद्ध व पूरी सफाई के साथ पूर्ण करना।

दस्तकारों के कौशल उन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण :

क्र. सं.	प्रशिक्षण विवरण	समयावधि
1.	आरी–तारी सूई के प्रयोग का अभ्यास करवाना।	4 दिन
2.	कपडों पर सूई से आरी–तारी के कार्य व डिजाईन का अभ्यास करवाना।	4 दिन
3.	कपडों पर सूई से सीधी बॉर्डर लाईन बनवाने का अभ्यास करवाना।	4 दिन
4.	कपडों पर सूई से आरी–तारी के कार्य की अन्य फूलों व पत्तियों की डिजाईन का अभ्यास करवाना।	12 दिन
5.	आरी–तारी सूई से कपडों पर कसब से आरी के कार्य का अभ्यास करवाना।	16 दिन

AARI TARI CLUSTER

6.	आरी–तारी की सूई से रेशम की आरी व सितारों के काम का अभ्यास करवाना।	4 दिन
7.	आरी–तारी व जरदोजी के सम्मिलित कार्य को साडियों व अन्य परिधानों पर डिजाइन बना कर सूई से बनाने का अभ्यास करवाना।	16 दिन
	कुल	**60 दिन**

संस्थान द्वारा अब तक कुल **13** कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है जिसमें वर्ष 2007–08 में कुल 6 कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुए जिनमें कुल 120 दस्तकार शामिल हुए जिसमें 60 पुरूष व 60 महिला दस्तकार शामिल हुए। जबकि वर्ष 2008–09 में कुल 5 कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित हुए जिनमें कुल 100 दस्तकार सम्मिलित हुए इनमें से 40 पुरूष व शेष 60 महिला दस्तकार थीं। तथा इसी क्रम में वर्ष 2009–10 में कुल 2 प्रशिक्षण आयोजित हुए जिनमें कुल 40 महिला दस्तकारों ने भाग लिया। उक्त प्रशिक्षण के माध्ययम से अब तक कुल **260** दस्तकारों को आरी–तारी के कार्य में उत्कृष्टता लाने के लिए प्रशिक्षित किया गया।

डिजाइन विकास प्रशिक्षण (D.D.T.) :–

पूर्व में नायला के आरी–तारी के दस्तकार पारम्परिक फूलों की व अन्य प्रचलित डिजाइनों का ही प्रयोक करते आ रहे थे। जिसके कारण बाजार में उनके उत्पादों का उचित मूल्य नही मिल पा रहा था, अतः क्लस्टर विकास की अन्य गतिविधियों के साथ ही संस्थान ने इन दस्तकारों द्वारा बनाऐ जाने वाले उत्पादों की डिजाइनों में उत्कृष्टता लाने हेतु समय–समय पर डिजाइन विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आयोजित करवाया। प्रारम्भ में दस्तकार साडियों व कुछ अन्य पारम्परिक परिधानों पर प्रचलित डिजाइनों के साथ गोटा पत्ति का कार्य करते थे, कुछ अर्द्ध कुशल दस्तकार ही आरी–तारी का डिजाइन का कार्य करते थे। बमुश्किल ही कोई नए डिजाइन व रंग संयोजन का इस्तेमाल किया करता था। अतः इस कारण इन उत्पादों की लागत मूल्य पर भी बाजार में बिक्री नहीं हो पाती थी। अतः इस प्रकार डिजाइन प्रशिक्षणें के माध्ययम से नायला के दस्तकार न सिर्फ विभिन्न प्रकार के डिजाइन बनाने में पारंगत हुए वरन् अपनी आमदनी बढाने में भी सफल रहे हैं।

दस्तकारों के डिजाइन विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम निम्न उद्देश्य के साथ संचालित किए गये :–

- आरी–तारी के अर्ध व अकुशल दस्तकारों हेतु 60 दिवसीय डिजाइन विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन करना।
- आरी–तारी व जरदोजी के कार्य को पृथक–पृथक व उनके सम्मिलित डिजाइन की कार्य दक्षता को बढाना।
- कार्य में विभिन्न प्रकार के डिजाइनों व रंग संयोजनों का उपयोग करने की कला का प्रशिक्षण देना।
- आरी–तारी के कार्य को व्यवस्थित, समयबद्ध व पूरी सफाई के साथ पूर्ण करना।

संस्थान द्वारा अब तक कुल **6** डिजाइन विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कुल 120 दस्तकार सम्मिलित हुए इनमें से 8 पुरूष व शेष 112 महिला दस्तकार थीं। उक्त प्रशिक्षण के माध्ययम से अब तक कुल **120** दस्तकारों को आरी–तारी के कार्य में उत्कृष्टता लाने के लिए प्रशिक्षित किया गया।

तकनीकी उन्नयन प्रशिक्षण (T.U.T.) :–

नायला में अधिकतर दस्तकार अर्द्ध या अकुशल श्रेणी के थे, जो कि पांरम्परिक तरीके से ही आरी–तारी का कार्य करते थे तथा बाजार की जरूरतों के मुताबिक नए उत्पाद का निर्माण नहीं कर पा रहे थे। न ही उन्हे किसी प्रकार का कोई तकनीकी ज्ञान था। क्लस्टर विकास कार्यक्रम प्रारम्भ करनें के बाद संस्थान द्वारा दस्तकारों के लिए तकनीकी उन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किए जिनमें डिजाइनरों द्वारा अभिनव प्रकार के विचार व डिजाइन बताकर व प्रशिक्षित कर दस्तकारों को लाभान्वित किया गया। पूर्व की तुलना में दस्तकार वर्तमान में साडी, लहंगा–चुन्नी, सलवार सूट, राजपूती पोशाकों के साथ ही जीन्स, टी–शर्ट, कुशन कवर तथा पर्दे आदि पर भी आरी–तारी/जरदोजी का कार्य पूरी कुशलता से कर रहें हैं। साथ ही इनके पास बाजार में विक्रय करने के लिए अब उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है।

संस्थान ने अब तक कुल तकनीकी उन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये हैं। जहां कुल 40 दस्तकारों को लाभान्वित किया गया है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम कुल 30 दिवस अर्थात एक माह का होता है, तथा अब तक कुल **5** तकनिकी उन्नयन कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं। जिनमें वर्ष 2008–09 में 2 तथा वर्ष 2009–10 में 3 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गये। वर्ष 2008–09 व वर्ष 2009–10 में सभी दस्तकार महिलाएं ही थीं जिनकी संख्या 100 है।

संस्थान द्वारा नायला क्लस्टर उत्पाद के बाजार विकास व विक्रय संवर्धन हेतु किये गए प्रयास :–

महाराणा प्रताप संस्थान द्वारा क्लस्टर विकास कार्यक्रम के तहत आरी–तारी/जरदोजी क्लसटर, नायला के उत्पादों के प्रदर्शन व विपणन हेतु समय–समय पर राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर आयोजित होने वाले मेंलों व प्रदर्शनियों में सक्रिय भाग लिया जाता रहा है। ताकि दस्तकारों के उत्पादों को न सिर्फ बाजारों में पहचान मिल सके बल्कि उनके निर्मित उत्पादों को सही मूल्य भी मिल सके ताकि इस हस्तकला से जुडें लोंगों का जीवन स्तर सुधर सके व नये दस्तकार भी इस हस्तकला क्षेत्र को अपनी रोजी–रोटी के रूप में अपना सकें। इस प्रकार के मेलों में भाग लेने से बाजार के रूख का भी पता चलता है, कि किस प्रकार के उत्पाद की मांग बजारों में ज्यादा है। संक्षिप्त में इस प्रकार के आयोजनों में भाग लेने का मुख्य उद्देश्य क्रेता–विक्रेता के बीच की देरी को कम करना व दस्तकारों को नये बाजारों, डिजाइनों व उनके उपभोक्ता से परिचित करवाना है।

ARI TARI CLUSTER

संस्थान ने समय–समय पर जिन मेंलों व प्रदर्शनियों में भाग लिया उनका विवरण निम्न प्रकार से है।:–

- संस्थान की राष्ट्र स्तरीय ट्रेड फेयर, 2007 में सक्रिय भागीदारी रही। उक्त मेला जयपुर हाट में 27 मार्च 2007 से 31 मार्च 2007 तक आयोजित किया गया जिसमें कुल 8 दस्तकारों के निर्मित उत्पादों को प्रदर्शित किया गया।
- 'क्राफ्ट इण्डिया 2007' नामक राष्ट्र स्तरीय मेले में संस्थान द्वारा भाग लिया गया। उक्त मेला भी जयपुर हाट स्थल पर ही आयोजित हुआ जिसकी अवधि 27 अक्टूबर से 5 नवम्बर 2007 तक थी। इस मेंले में 4 क्लस्टर विकास समूहो के आरी–तारी व जरदोज़ी के उत्पादों को प्रदर्शित किया गया।
- संस्थान ने 14 नवम्बर 2007 से 27 नवम्बर 2007 तक नई दिल्ली में चले अंतराष्ट्रीय ट्रेड फेयर में सक्रिय भाग लिया गया। उक्त मेले में 6 विभिन्न क्लस्टर विकास समूहों के निर्मित उत्पादों को प्रदर्शित किया गया। मेले में आये आगन्तुकों ने प्रदर्शित उत्पादों की बहुत सराहना की।
- संस्थान द्वारा दिनांक 3 मार्च से 17 मार्च 2008 तक चले 15 दिवसीय मेले में सक्रिय भाग लिया गया जिसका नाम 'नेशनल हेण्डलूम एक्सपो 2008' था। उक्त राष्ट्र स्तरिय मेला एस.एम.एस. स्टेडियम, अम्बेडकर सर्किल, जयपुर में आयोजित किया गया था। इस मेले में भी संस्थान की ओर से 8 क्लस्टर विकास समूहों के बनाए उत्पादों को प्रदर्शित किया गया। इस हेतु संस्थान के चार प्रतिनिधियों ने मेले में भागीदारी की।
- जयपुर हाट, परशुरामद्वारा, जयपुर में 7 दिवसीय व्यापार मेले का आयोजन 5 मार्च से 11 मार्च 2008 तक किया गया जिसका नाम 'हस्त शिल्प प्रदर्शनी 2008' था। उक्त मेले मे भी महाराणा प्रताप अध्ययन एवम् जन कल्याण संस्थान के चार प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा 8 क्लस्टर विकास समूहों के बनाए आरी–तारी/जरदोज़ी उत्पादों का प्रदर्शन किया गया।
- महाराणा प्रताप संस्थान द्वारा 'नेशनल हेण्डलूम एक्सपो 2009', जयपुर में अमरूदों के बाग में आयोजित किया गया था जो कि 21 जनवरी से 4 फरवरी 2009 तक आयोजित हुआ।
- संस्थान द्वारा 'क्लस्टर क्रियेशन 2009' नाम से आयोजित क्रेता–विक्रेता सम्मेलन व प्रदर्शनी में सक्रिय भाग लिया गया। इसका आयेजन 26 फरवरी से 2 मार्च 2009 तक अरबन हाट, पाली रोड, जोधपुर में आयोजित किया गया था। उक्त कार्यक्रम में संस्थान के तीन प्रतिनिधि शामिल हुए।
- 13 अगस्त से 16 अगस्त 2009 तक 'फॉरेक्स फेयर 2009' जो कि बी.एम. बिडला ऑडिटोरियम, सटेच्यू चौराहा, जयपुर में आयोजित हुआ में भाग लिया गया। उक्त मेले का उद्घाटन

माननीय उद्योग मंत्री राजस्थान सरकार व आयुक्त उद्योग, राजस्थान द्वारा किया गया। इन गणमान्य लोगों द्वारा संस्थान के स्टॉल पर प्रदर्शित उत्पादों की अति प्रशंसा की गई।

- 'कला एक्सपो 2009' (शिल्पआंगन, कला को समर्पित एक यात्रा) में संस्थान की भागीदारी विशेष सराहनीय रही। इस प्रदर्शनी में दस्तकारों के उत्पादों की भारी मात्रा में बिक्री व क्रय आदेश प्राप्त हुए। उक्त मेला दिनांक 20 अगस्त 2009 से 30 अगस्त 2009 तक अरबन हाट, सी.बी.डी. बेलापुर, नवी मुम्बई में आयोजित किया गया था। इस मेले का उद्घाटन माननीय मंत्रीए वस्त्र उद्योग, महाराष्ट्र सरकार द्वारा किया गया। इसमें संस्थान के 3 प्रतिनिधियों द्वारा क्लस्टर उत्पादों का प्रदर्शन व विपणन किया गया।
- प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला 2009 का आयोजन दिनांक 14 नवम्बर से 27 नवम्बर 2009 तक किया गया। उक्त मेले का उद्घाटन महामहीम राष्ट्रपति, भारत सरकार द्वारा किया गया। जिसमें संस्थान की तरफ से प्रदर्शित क्लस्टर उत्पादों की भारी सराहना की गई।
- दिनांक 8 फरवरी से 26 फरवरी 2010 तक आयोजित मेला 'राजस्थानी आर्ट एण्ड क्राफ्ट फेस्टीवल' जो कि कला ग्राम, चंडीगढ में था, उक्त मेले में संस्थान की सक्रिय भागीदारी व क्लस्टर उत्पदों की आगंतुकों द्वारा विशेष सराहना की गई।

दस्तकारों के आर्थिक सहायता हेतु किये गए प्रयास :–

दस्तकारों के आर्थिक उत्थान व वित्तिय आवश्यक्ताओं की पूर्ति हेतु संस्थान द्वारा विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी वित्तिय संस्थाओं द्वारा ऋण उपलब्ध करवाने हेतु लगातार सम्पर्क किया जा रहा है, इसी क्रम में अब तक कुल 80 दस्तकारों के क्रेडिट कार्ड प्रार्थना पत्र जिला उद्योग केन्द्र जयपुर ग्रामीण के माध्ययम से उक्त संस्थाओं को भिजवा दिए गये हैं। तथा संस्था प्रतिनिधि लगातार इस हेतु प्रयासरत हैं। इसके तहत अब तक कुल 250 दस्तकारों के क्रेडिट कार्ड प्रर्थना पत्र भरवाए जा चुकें है। इसी प्रकार अब तक 85 दस्तकारों को सरकार से दस्तकार परिचय पत्र उपलब्ध करवाए जा चुके हैं। शेष के परिचय पत्र विभाग द्वारा प्रक्रियाधीन है।

साथ ही संस्था के प्रतिनिधियों द्वारा दस्तकारों को सामूहिक बीमा योजना का भी लाभ उपलब्ध करवाया जा रहा है।

संस्थान द्वारा दस्तकार हित में आयोजित अन्य गतिविधियां :–

संस्थान द्वारा समय–समय पर दस्तकारों के स्वास्थ्य व सामाजिक स्तर में सुधार हेतु विभिन्न गतिविधियों का क्रियान्वयन किया जाता रहा है, जैसे की :

अंतराष्ट्रीय AIDS दिवस पर आयोजित कार्यक्रम द्वारा लोंगों को एड्स के बारे में जागरूक किया गया। तथा सामाजिक जीवन में स्वस्थ्य यौन व्यवहार के लिए प्रेरित किया। जिसमें कुल 99 दस्तकारों ने सक्रिय भाग लिया।

AARI TARI CLUSTER

उपलबिधयां :–

- दस्तकारों के सहयोग व मार्गदर्शन हेतु 'दस्तकार सहायता केन्द्र' की स्थापना।
- कुल 37 'क्लस्टर विकास समूह' की स्थापना व क्षमता संवंर्धन।
- 13 'कौशल विकास प्रशिक्षण' के तहत 260 दस्तकारों को प्रशिक्षित किया गया।
- 120 दस्तकारों को 6 'डिजाइन विकास प्रशिक्षण' के माध्ययम से प्रशिक्षित किया गया।
- 5 'तकनीकी उन्नयन प्रशिक्षण' के माध्ययम से कुल 100 दस्तकारों को लाभान्वित किया गया।
- राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय व राज्य स्तरिय मेलों व प्रदर्शनियों में दस्तकारों के उत्पादों को प्रदर्शित करने हेतु संस्थान द्वारा लगभग 14 मेंलों व प्रदर्शनियों में सक्रिय भाग लिया गया।
- नायला व आस–पास के क्षेत्र के 12 से 15 दस्तकारों ने प्रशिक्षित होकर स्वंय की उत्पादन ईकाई स्थापित कर ली है। जिससे यह दस्तकार 400 से 500 रूपये प्रतिदिन की कमाई कर रहें हैं। जहां पहले यह दस्तकार अकुशल होने के कारण 20 से 30 रूपये ही प्रतिदिन कमाते थे। साथ ही यह लोग हर ईकाई पर 8 से 10 साथी दस्तकारों को रोजगार उपलब्ध करवा रहे हैं।
- जिन अर्धकुशल दस्तकारों ने संस्थान द्वारा आयोजित कौशल व डिजाईन विकास प्रशिक्षण में भाग लिया वह भी 50 से 150 रूपये प्रतिदिन कमा रहे हैं। जो कि पूर्व में 20 से 30 रूपये कमाते थे।

AARI TARI CLUSTER

⇨ **संलग्न परिपत्र :–**

1. वर्षवार 2007 से 2010 तक संस्थान द्वारा क्लस्टर विकास हेतु आयोजित गतिविधियां :–

क्रं सं	गतिविधि का नाम	वर्ष 2007–2010							
		सम्पन्न गतिविधियां		सम्पन्न गतिविधियां		सम्पन्न गतिविधियां		कुल सम्पन्न गतिविधियां	कुल सम्मिलित दस्तकार
		गतिविधि	दस्तकार	गतिविधि	दस्तकार	गतिविधि	दस्तकार		
1.	आर्टिजन असिस्टैंस सेन्टर	2007_08		2008_09		2009_10		2007_10	2007_10
	1. मास्टर ट्रेनर	1		1		1		1	1
	2. क्लस्टर कोर्डिनेटर	1		1		1		1	1
	3. मार्केटिंग कन्सल्टैंट			1		1		1	1
	4. डिजाइनर	1		1		1		1	1
	5. असिस्टैंट ट्रेनर	1		1		1		1	1
	6. किराया								
	7. विविध व्यय								
	8. कम्प्यूटर एवम् फर्निचर								
2.	प्रशिक्षण कार्यक्रम								
	1. स्किल डेवलपमैंट	6	120	5	100	2	40	13	260
	2. तकनीकी उन्नयन			2	40	3	60	5	100
	3. डिजायन डेवलपमैंट			6	120			6	120
3.	संल्स प्रमोशन एवं मार्केटिंग असिस्टैंट								
	1. मेले व प्रदर्शिनियां	5		5		4		14	14
4.	क्लस्टर विकास समूह	20	303	10	111	7	90	37	504
5.	वेबसाइट					1		1	1
6.	केटेलॉक एवं ब्रोशर					ब्रोशर पिंटिंग			
	मोटिवेशन सेमिनार	31		6				37	1230
	फालोअप सेमिनार	14		16				30	739